REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

भारतीय राजनीति में धर्म का प्रयोगः एक अध्ययन

डॉ. राम विनोद कामत
बी० ए०, एम० ए०, बी० एड, पी–एच०डी०
+2प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल, दुलारपुर, दरभंगा.

भूमिका

दक्षिण अफ्रीका की बीस वर्षो के उनके कार्य साधना ने यूरोप में उतनी खलबली नहीं मचाई जितनी की भारत में। हमारे राजनीतिज्ञों, ऐतिहासिकों एवं मानवशील सुधीजनों की दृष्टि में अविश्वसनीय संकीर्णता ही प्रभावित होती है। यह कर्म साधना आत्मा का एक महाकाव्य है जो इस युग में नामुमकीन है। केवल अविचलित आत्मत्याग की अपनी शक्ति के कारण ही नहीं बल्कि अपनी अंतिम विजय के कारण ही। अगर तिलक ही असामयिक अवसान न हुआ होता तो गाँधी किस श्रेणी के नेता रहते यह यज्ञ प्रश्न बनकर रह जाता, क्योंकि कर्म क्षेत्र पर दोनों का समान अधिकार था ये दोनों धार्मिक विचारक थे। नैतिक गुणों से सम्पन्न एक अल्पसंख्यक पिछड़ा वर्ग जन समूह के नेतृत्व की भूमिका ही गाँधी के स्वभाव और उनकी हार्दिक आकांक्षाओं के अधिक अनुकूल होती, वे कहा करते थे कि राजनीति साधुओं के लिए नहीं है। उनमें निर्विवाद न्यायपरायणता थी और उनका जीवन निष्कलंक और पवित्र था। देश के लिए उनमें धार्मिक भावना युक्त था। इस तरह की बातें साबित करती है कि वे केवल भारत के ही नहीं सारी दुनियाँ के महापुरूष थे, सभी के आत्मीय थे। गाँधी की विचारधारा दो स्तरों पर प्रवाहित है। एक ओर है उनकी ध्यान धारणा जो मूलतः धर्म भावना है, और दूसरी ओर है समाज सुधार लोगों की नजरों से छिपे अनेक बिन्दुओं पर काम किया। स्वभाव से वे धार्मिक थे, राजनीतिक में तो लाचारी से आए।

गाँधी जी के राजनीतिक विचार

गाँधीजी ने अपने राजनीतिक विचार विभिन्न स्रोतों से लिये। उन्होंने थोरो, रस्किन, इमर्सन और टाल्स्टाय को पढ़कर उनसे प्रेरणा ली। वैष्णव धर्म और जैन धर्म से वे अधिक नहीं तो उतने ही प्रभावित थे क्योंकि गुजरात में जीवन के दर्शन से कुछ सीमा तक भिन्न था। उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता की आलोचना की'' मैं तो मानता हूँ कि हिन्दुस्तान ने जिस सभ्यता का नमूना दुनियाँ के सामने पेश की है, दुनियाँ की कोई सभ्यता उसका मुकाबला नहीं कर सकती''। हिन्द स्वराज जिसे गाँधी की विचारधारा का प्रामाणिक वक्तव्य माना जाता है जिसमें उन्होंने भारतीय राष्ट्र की एक सभ्यता रूपी धारणा झलकती है। प्राचीन भारतीय सभ्यता सर्वश्रेष्ठ थी। भारतीय राष्ट्रीयता के स्रोत थे क्योंकि इसमें विभिन्न पंथों वाले विदेशियों के आत्मसात करने की असीमित क्षमता है। इस सभ्यता की जितनी बुनियाद ठोस है और जिसने हमेशा नैतिकता को उदात्त बनाया। आधुनिक सभ्यता को उन्होंने ईश्वरहीन कहा जिससे कुछ भी सीखना नहीं है, जो सिर्फ अनैतिकता का प्रचार करती है।

गाँधी के प्रति जनता के आकर्षण का कारण था उनकी सादगी वेशभूषा देहाती हिन्दी का प्रयोग, राम राज्य के लोकप्रिय मुहावरा जो आम लोगों की समझ में आसानी से आने वाली थी। धार्मिक प्रतीकों और मुहावरों का कुशल प्रयोग उनके करिश्माई आकर्षण का आधार था। वे ऐसी पराप्राकृतिक शक्ति से लैस थे जो कष्टों को दूर करके आम जनता को उसकी रोजमर्रा की बदहालियों से मुक्ति दिला सकती थी। वे केवल जनता को मारना नहीं चाहते थे, बल्कि एक नियमित जन आन्दोलन चाहते थे जो उनके तय किए हुए रास्ते पर ही सख्ती से कायम रहे। जनता ने गाँधीवादी राजनीति की सीमाओं का बार–बार उल्लंघन किया और उनके

आदर्शो से अलक हटी पर साथ ही यह विश्वास करती थी कि वह अपने मसीहा के पीछे चलकर गाँधीराज के एक नए मंजिल पर पहुँचेंगे।

गाँधी के राजनीतिक चिन्तन की छाप भारतीय राजनीतिक मंच पर सबसे पहले 1917 के चम्पारण किसान आन्दोलन में परिलक्षित होती है। 1916 के लखनऊ काँग्रेस में चम्पारण के किसान राजकुमार शुक्ल मिले। इसी जलसे में पंडित जवाहरलाल नेहरू से भी गाँधीजी की पहली मुलाकात हुई थी। राजकुमार शुक्ल गाँधीजी को चम्पारण आकर वहाँ के किसानों की स्थिति से अवगत कराना चाहते थे। चम्पारण जिले में गाँधीजी ने अनूठे ढंग से शुरूआत की। अपने एक विशिष्ट अंदाज में जो उनकी कार्य प्रणाली से मनोवैज्ञानिक रूप से जुड़ाया और जो बाद में उनकी एक विशिष्ट कार्यशैली बन गयी थी।

गाँधी जी का राजनैतिक प्रवेश की मजबूरी

मनुष्य के आध्यात्मिक प्रगति के इतिहास में ऐसे महिमा मण्डित बिरले ही मानव हुए जिनका नैतिक मूल्य असाधारण है। यद्यपि राजनैतिक दृष्टि से महाविडम्बना का काल है। गाँधी ने स्वयं स्वीकार किया है कि लोग इस काम को राजनैतिक दृष्टि से असंभव और असंगत मान सकते हैं। देश की सारी शक्ति को एकत्रित करके आन्दोलन का ठीक निर्दिष्ट समय पर उसे इस तरह से रोक देना और स्पष्ट संकेत न देना सचमुच संकट को आमंत्रित करना है। इससे सत्याग्रह को दमित होने की आशंका है और आशंका है देश को बांधने की क्षमता को अचानक टूट जाने की।

असहयोग आन्दोलनः–

1919 का वर्ष विपत्तियों से भरा था। अशान्ति के मुख्य कारण थे पंजाब में मार्शल और उसके दण्डात्मक परिणाम, का टर्की की पराजय, मांटेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधार। पंजाब और अन्यत्र जो घटनाएँ घटी थी उसका उनसे राष्ट्रीय स्वाभिमान बहुत आहत हुआ था। गाँधीजी सबके बीच केन्द्रीय व्यक्तित्व के रूप में मौजूद थे। वह सत्याग्रह के जनक और प्रेरक होने के अलावे पंजाब जाँच समिति के सबसे अधिक सक्रिय सदस्य थे। उन्होंने अखिल भारतीय खिलाफत समिति की अध्यक्षता की थी, जिससे सावित होता है कि मुसलमानों का उन पर कितना विश्वास था। उनके विचार और कार्य का मूल तत्त्व सिद्धांत रूप से यही था कि मूलतः मनुष्य ईश्वर का ही अंश है और जीवन का सम्पूर्ण प्रयोजन यही है कि व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में उसके देवत्त्व को स्वीकार किया जाय। सिद्धांत और व्यवहार रूप में धर्म, दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र, समाजविज्ञान आदि इन सबका मूल लक्ष्य मानव को आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिए। गाँधीजी के अनुसार सत्य और अहिंसा में ही अभिव्यक्त होती है। सत्य ही वैयक्तिक जीवन का धर्म है।

रचनात्मक कार्यक्रमः–

चौरी–चौरा काण्ड के बाद असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया गया। गाँधीजी राष्ट्रहित के अपराध में 6 साल की सजा सुनाई गई और उन्हें भरवदा जेल भेज दिया गया। 20 मार्च, 1922 से 12 जनवरी, 1924 तक वे जेल में रहे। वे वहाँ बहुत खुश थे। जेल से भेजे गए पत्र में उन्होंने लिखा था एक पंछी की तरह मैं खुश हूँ।'' जेल से बाहर उनका जीवन सार्वजनिक था। इतने लोगों से धीरे रहते थे कि यह एकान्तप्रिय और मननशील प्रकृति के लिए अच्छा था। अंग्रेज जेल अधिकारी इनके प्रति नम्र थे जब उन्होंने उनकी कोठरी से चरखा लाए जाने की अनुमति दी थी। इसी एक मात्र सुविधा को उन्होंने स्वीकारा। प्रतिदिन चार घंटे कताई करने में उन्हें काफी प्रसन्नता होती थी जेल से बाहर उन्हें कभी भी कताई के लिए घंटे भर से अधिक समय नहीं मिल पाता था। वैसे चक्र का अर्थ रहस्यमय है, जैसा कि बौद्ध मतावलम्बियों का मानना है। पर गाँधीजी के लिए इसका अर्थ अलग था।'' मैं जितनी बार चरखे से सूत निकालता हूँ उतनी ही बार भारत के गरीबों का विचार करता हूँ, मैं चरखे के लिए इस सम्मान का दावा करता हूँ कि वह हमारी गरीबी की समस्या को लगभग बिना कुछ खर्च किए और बिना किसी दिखावे के अत्यन्त सरल और स्वाभाविक ढंग से हल कर सकता है। वह राष्ट्र की समृद्धि का था और इसलिए उसकी आजादी का चिन्ह है। सूत कताई के प्रति वे समर्पित थे। घुनाई और बुनाई पहले ही सीख ली थी। शेष बचे समय में वे पुस्तक पढ़ने, पत्र लेखन और

चिन्तन में व्यस्त रहते थे। सबसे अधिक समय गीता पढ़ने में और कुरान, ईसाई ग्रन्थों के मनन में भी समय व्यतीत किया।

नमक सत्याग्रह

1926 में काँग्रेस अध्यक्ष के रूप में उनका कार्य काल समाप्त होने वाला था जब उन्होंने एक वर्ष के राजनीतिक मौन का एलान कर दिया। इसके तरह राजनीतिक मामलों में कुछ भी नहीं बोलने का और आश्रम के आस–पास ही रहने का निर्णय लिया।

1929 में काँग्रेस का लाहौर अधिवेशन तनावपूर्ण राजनीतिक वातावरण में हुआ। लाहौर काँग्रेस कमिटी के अनुसार स्वराज की अर्थपूर्ण स्वतंत्रता थी। इसने आल इण्डिया काँग्रेस कमिटि को यह अधिकार दिया कि जब वह उचित समझे अवज्ञा आन्दोलन शुरू कर दे। इस आन्दोलन के अनुसार कर का भुगतान भी बन्द कर देना था। फरवरी में सावरमती में काँग्रेस कमिटी के बैठक हुई और इसमें गाँधी और इनके सहयोगी को नागरिक अवज्ञा आन्दोलन के नेतृत्व और संचालन का सारा अधिकार सौंप दिया गया। आन्दोलन शुरू होने से पहले गाँधीजी पूर्णरूपेण आश्वस्त होना चाहते थे कि इससे प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्ष किसी भी तरह थोड़ी सी भी हिंसा नहीं होगी। उनकी राय थी कि अगर अहिंसक आन्दोलन नहीं शुरू किया गया तो स्वतंत्रता के लिए अधीर व्याकुलता के कारण देश भर में हिंसक आन्दोलन शुरू हो जाएँगे। ''गाँधीजी का हल बुद्धिमता की उपज थी कोई भी सेना नायक किसी सैनिक योजना की इससे अच्छी व्यवस्था नहीं कर सकता था। नमक सत्याग्रह में ऊँची सैनिक युक्ति के तल सारे आकस्मिक शक्तियों का सांवेदिक संगठन, अनुशासन, संगठन प्रक्रिया की सरलता, युद्ध के साधनों और शस्त्रों की सर्व सुलभता, शत्रु की सेना का अवरोध और उसकी चुनौत निहित थे। वह विचित्र युद्ध था, इसमें क्षति और मृत्यु तथा कष्ट सब एक पक्षीय थे। एक कुशल सेना नायक का सर्वश्रेष्ठगुण गाँधीजी में विद्यमान था जो समय की माँग थी।

भारत छोड़ों आन्दोलनः–

भारत छोड़ों आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास का एक ऐसा पक्ष है जिसके विषय में शोध कार्य बहुत कम हुए हैं। आन्देालन के स्वरूप और विस्तार के बारे में किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन है। इन दिनों कुछ विद्वानों ने स्थानीय और क्षेत्रीय अध्ययन किए हैं, बावजूद कोई स्पष्ट चित्र नहीं उभरता जिसका कारण दृष्टिकोण में भेद होना है। इस आन्दोलन को अगस्त क्रान्ति के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय जनता की वीरता और लड़ाकूपन की अद्वितीय मिसाल है। उसका दमन भी इतना ही पाशविक था। जिन परिस्थितियों में यह आन्दोलन छेड़ा गया था वैसी प्रतिकूल स्थितियाँ भी राष्ट्रीय आन्दोलन में अब तक नहीं आई थी। काँग्रेस बम्बई में 7–8 अगस्त को महा समिति द्वारा निम्न प्रस्ताव पास किया गया।

''कमेटी भारत के स्वतंत्रता और स्वाधीनता के अविच्छेद अधिकार का समर्थन करने के उद्देश्य से अहिंसात्मक प्रणाली में अधिक विस्तृत परिणाम पर एक विशाल संगाम चालू करने की स्वीकृति देने का निश्चय करती है जिसे देशगत बाईस वर्षो के शांतिपूर्ण संग्राम से संचित की गई समस्त अहिंसात्मक शक्ति का प्रयोग कर सके। यह संग्राम निश्चय ही गाँधी के नेतृत्व में होगा और कमेटियाँ उनसे नेतृत्व करने और प्रस्तावित कार्रवाईयों में राष्ट्र का पक्ष प्रदर्शन करने का निवेदन करती है''। प्रस्ताव पास हो गया। जनता का उत्साह देखते ही बनता था। अन्दर नेता विभिन्न मुद्दों पर विचार विमर्श कर रहे थे और बाहर जन समूह उमड़ा रहा था। उसके बाद गाँधीजी ने भाषण देते हुए कहा–

''मैं इस लड़ाई में आपका नेतृत्व करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेता हूँ सेनापति या नियंत्रक के रूप में नहीं, बल्कि आपके तुच्छ सेवक के रूप में और जो कोई सर्वाधिक सेवा करेगा वही मुख्य सेवक माना जाएगा। मैं तो राष्ट्र का मुख्य सेवक हुँ। मेरी अन्तरात कहती है कि मुझे अकेले ही संसार से लोहा लेना पड़ेगा। वह मुझ से यह भी कहती है कि जब तक तुमसे निःशंशक होकर संसार का सामना करने की ताकत है, तब तक तुम सुरक्षित हो। भले ही दुनिया तुम्हें किसी और नजर से देखे।..... अगर संसार के सभी राष्ट्र मेरा विरोध करें यदि समस्त भारत भी मुझे समझाने की कोशिश करे तो भी मैं अपने मार्ग से विचलित नहीं होऊँगा। मैं आगे ही कदम बढ़ाता जाऊँगा सिर्फ भारत के लिए नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए''।

गाँधीजी के भाषण का असर जादू की छड़ी जैसा पड़ा। संघर्ष इसी छड़ी से शुरू हो रहा है। करो या मरो का नारा दिया गया। या तो भारत को हम आजाद कराऐंगें या इस कोशिश में हम अपनी जान दे देंगे। गाँधीजी ने कुछ निर्देश भी दिए थे। सरकारी कर्मचारी नौकरी न छोड़े सैनिक अपने देशवासियों पर गोलियाँ नचलाए, राजा महाराजा जनता की प्रभुसत्ता स्वीकारें, किसान मालगुजारी देना बंद कर दें, इससे गाँधीजी का इरादा स्पष्ट झलकता है।

9 अगस्त को काँग्रेस के सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर अज्ञात जगह भेज दिया गया। सरकार के इस अचानक हमले से देश भर में आँधी आ गयी। 10 अगस्त को दिल्ली कानपुर–इलाहाबाद, वाराणसी, पटना, अहमदाबाद आदि जगहों पर हड़ताल रही। इसके बाद अखवार को भी नहीं बख्शा गया। हरिजन और नेशनल हेराल्ड तो आन्दोलन भर बंद ही रहा।'' काँग्रेस एक गैर कानूनी संस्था करार दी गई। कोई निश्चित संगठन न था। भारत के विभिन्न भागों में बड़े पैमाने पर हिंसात्मक दंगे एवं आक्रमण और अनिश्चित दुर्व्यवस्था जैसे तार एवं फोन की लाइने काटना रेलवे की पटरियों, स्टेशनों आदि को नुकसान पहुँचाना। सरकार ने दमन के कड़े उपाय लगाए। कहीं–कहीं हवाई जहाजों से गोलियाँ चलायी गयी''। इस तरह 1942 के आन्दोलन को दबाया गया।

इन्हीं दिनों 10 फरवरी को जेल में 21 दिनों के उपवास की घोषणा कर दी। इस संकट से उबरने के लिए गाँधीजी को रिहा करके टालना चाहा परंतु उन्होंने रिहा होने से इंकार कर दिया। इसका अर्थ हुआ कोई और कार्यवाही करेंगे। बायसराय के लिए वे ही रहने दिया जाय और उपवास करने दिया जाय। यह उपवास भारत के हर व्यक्ति के लिए भयावह रहा और सरकार सभी ओर से परेशानियों से घिरी हुई थी। लोगों को उनके दर्शन के लिए छूट थी क्योंकि उनकी मृत्यु के भय से पूरा देश आशंकित था। एक के बाद एक दो निजी व्यथा और शामिल हो गई थी एक उनके प्रति समर्पित सचिव महादेव देसाई का निधन जिन्होंने उनके साथ गीता पर काम किया था और दूसरा उनकी जीवनसंगिनी उनकी पत्नी कस्तूरबा वाई का देहान्त दोनों ही बातों में गाँधीजी की वेदना अनन्त थी, लेकिन उन्होंने इसे गीता के अनासक्ति के सिद्धांत के रूप में व्यक्त करने की चेष्टा की। भारत वर्ष में उनकी रिहाई के लिए आन्दोलन शुरू हो गए। 16 मई को सुबह 8 बजे गाँधीजी और उनके साथी रिहा कर दिए गए। ''जेल से गाँधीजी का यह अंतिम निवास था। कुल मिलाकर वह 2089 दिन भारत की जेलों में और 249 दिन दक्षिण अफ्रीका की जेलों में रहे''।

भारत छोड़ों आन्दोलन स्वस्फूर्त आन्दोलन था। गाँधीवादी आन्दोलन का तरीका यह था कि नेतृत्व कर्त्ता कार्यक्रम की रूपरेखा बनाकर उसका कार्यान्वयन स्थानीय स्तर के कार्यकर्त्ताओं पर छोड़ दिया जाता। जिन लोगों ने हिंसक साधनों का प्रयोग किया उनका मानना था कि परिस्थितिवश ऐसा किया गया। उनमें से अनेक निष्ठावान गांधीवादियों ने 1942 की हिंसा की निन्दा करने से इंकार कर दिया था। उनका कहना था कि वह सत्ता की बड़ी हिंसा का जबाव था ''यह विद्रोह आरंभ से हीं हिंसक और पूरी तरह अनियमित रहा, क्योंकि काँग्रेस के नेतृत्व की पूरी पहली कतार इसके आरंभ से पहले ही सलाखों के पीछे थी। इसलिए इसे स्वस्फूर्त क्रान्ति भी कहा जाता है, क्योंकि कोई भी पूर्व ही सलाखों के पीछे थी। इसलिए इसे स्वस्फूर्त क्रान्ति भी कहा जाता है, क्योंकि कोई भी पूर्व निर्धारित योजना ऐसे तात्कालिक और एक रस परिणाम नहीं दे सकती थी। हिंसा पर गाँधीजी की ज्यादा आपत्ति इसलिए थी कि इससे जन भागीदारी घटती थी, लेकिन 42 में स्थिति ऐसी नहीं थी।

इस ऐतिहासिक आन्दोलन की एक बड़ी खूबी यह रही है कि इसके द्वारा आजादी की माँग राष्ट्रीय आन्दोलन पहली माँग बन गई। भारत छोड़ों के बाद अब पीछे नहीं मुड़ा जा सकता था। ब्रिटिश सरकार से भविष्य में जो भी बातचीत होनी थी उसमें सत्ता के हस्तान्तरण का सवाल आना ही था और इस सवाल पर कोई मोलभाव नहीं किया जा सकता था। आन्दोलन की दूसरी यह खूबी थी कि ब्रिटिश शासन ने यह महसूस किया कि युद्धकालीन सहशक्तियों के बिना ऐसे उग्र जन आन्दोलनों से निपटना मुश्किल होगा। युद्ध जब समाप्त होगा तो इतने भारी विरोध के मुकाबले ताकत के बल पर भारत को अपने बस में रखना हर तरह से महंगा सौदा होगा और इसलिए सम्मानजनक और सुव्यवस्थित ढंग से अलग होने के लिए समझौता वार्ता की अधिक तत्परता दिखाई देने लगी। इन वार्ताओं में काँग्रेस की प्रमुखता होने वाली थी। काँग्रेस का अर्थ गाँधीजी था क्योंकि वही अकेली राजनीतिक संगठन थी जिसमें ऐसा जन आन्दोलन खड़ा करने की क्षमता थी और उसे अकेला ऐसा संगठन भी माना जा रहा था जो भारत एक स्थिर सरकार दे सकती थी।

निष्कर्षः–

इतिहास के इस मोड़ पर पहुँचकर गाँधी ने जो भारतीय राजनीति में सत्य और अहिंसा के शस्त्रा का प्रयोग किया वह बेमिशाल है। अहिंसा की उनकी नीति भारत के चित्त में दो हजार वर्षो से अंकित है। महावीर, बुद्ध और वैष्णवों ने उसे लाखों लाख आत्माओं का सारतत्त्व बना दिया है। गाँधी ने उसमें वीरतापूर्ण रक्त संचार कर दिया। अतीत की विशाल छाया और न जाने कितनी शक्तियाँ भयंकर विभिन्न जड़ता में पड़ी थी उन्होंने उनको आवाद दी, नयी ऊर्जा दी, आवाज सुनते ही जाग उठे, उन्हीं में अपने को खोल सके। आज अमर भारत की आत्मा अपने मंदिरों और जंगलों से ऐसे आवेग के साथ निकल आयी है। यह संदेश केवल भारत की सीमा में ही आवद्ध नहीं है। वह और भी बहुत दूर तक फैल गया है। सत्य, अहिंसा का संदेश केवल भारत हीं दे सकता है। उसने केवल अपनी अहिंसा को ही पवित्रा नहीं किया अपने त्याग को भी पवित्र किया है। ''सम्भवतः किसी सम्पूर्ण जाति के आत्मत्याग से ही विश्व को नवीन जीवन प्राप्त होता है। यहूदियों ने अपने माता के लिए बलिदान दिया था जिसके आगमन के आशा में शताब्दियों से अपने मन में संजोये हुए थे। लेकिन जब वे माता आए रक्तरंजित क्रास पर पुष्पित हुए तब वे पहचान ही नहीं सके। भारतीयों ने अपने माता को पहचाना है। यह उनका सौभाग्य है।''

संदर्भ

1. रोमा रोला–महात्मा गाँधी जीवन और दर्शन– पृष्ठ 17, लोक भारती प्रकाशन, साहित्य अकादमी की ओर से 2008
2. शेखर बंद्योपाध्याय–फ्लासी से विभाजन, तक, पृष्ठ–311, औरिएंट ब्लैक स्वान पृष्ठ–209
3. गिरिराज किशोर– हिन्द, स्वराज पृष्ठ 242 सस्ता साहित्य मंडल–2009
4. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चम्पारण में महात्मा गाँधी पृष्ठ 81, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
5. पूर्वोक्त पृ0 97
6. बिंसेट शीन–एक महात्मा की संक्षिप्त जीवनी, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार
7. लुई फिशर–गाँधी की कहानी पृष्ठ–65, सस्ता साहित्य मंडल
8. रविन्द्र कुमार–आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास पृष्ठ–183 ग्रन्थ शिल्पी।
9. लुई फिशर– पूर्वोक्त, पृ0 69
10. मो0 क0 गाँधी–यंग इण्डिया 31.03.1920